समकालीन
तीसरी दुनिया
महाशक्तियों के प्रभुत्ववाद के खिलाफ तीसरी दुनिया के प्रतिरोध का मुखपत्र

मूल्य ₹ 20.00 (भारत में)
रु. 30.00 (नेपाल में)
सितंबर 2015

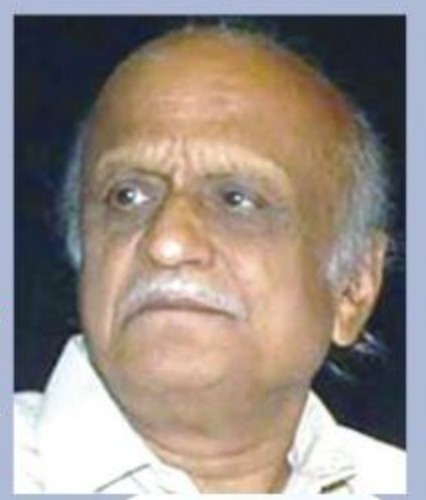

कन्नड़ विद्वान कलबुर्गी की हत्या

इस्लामिक कट्टरपंथ के खिलाफ रोजावा की क्रांति

अमीरदास आयोग

कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं लहू का सुराग...

संजीव भट्ट की सेवाएं समाप्त करने के निहितार्थ

छिटमहल के लोगों को नसीब हुआ अपना वतन

बंगाल की क्रांतिकारी कविताएं

शहीदों के इतिहास को बदलने की साजिश

कानपुर में गोष्ठी और 'कविता 16मई के बाद

मंच पर अनीता मिश्र, कार्यक्रम के अध्यक्ष जयप्रकाश जायसवाल और प्रमुख वक्ता आनंद स्वरूप वर्मा

24 अगस्त को स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र संघर्ष की योद्धा कैप्टन लक्ष्मी सहगल की चौथी पुण्य तिथि एवं महान साहित्यकार भीष्म साहनी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जनवादी लेखक संघ, कानपुर ने 'कॉरपोरेट एवं सांप्रदायिक शक्तियों के गठजोड़ के दौर में बुद्धिजीवियों की भूमिका' पर गोष्ठी तथा 'कविता 16 मई के बाद' कार्यक्रम के अंतर्गत काव्य पाठ का आयोजन किया। इस अवसर पर कानपुर तथा आसपास के इलाकों से भारी संख्या में लोगों ने इसमें शिरकत की। (रिपोर्ट पृष्ठ 52 पर)

'कविता 16 मई के बाद' : मंच पर रंजीत वर्मा, कौशल किशोर, कमल किशोर श्रमिक और प्रभा दीक्षित

समकालीन
तीसरी दुनिया

सितंबर 2015

संपादक मंडल
मंगलेश डबराल
वीरेन डंगवाल
राम शिरोमणि शुक्ल
रंजीत वर्मा
अभिषेक श्रीवास्तव

संपादक
आनन्द स्वरूप वर्मा

नेपाल प्रतिनिधि
नरेश ज्ञवाली

कला सहयोग
प्रमोद शर्मा

संपादकीय संपर्क:
क्यू-63, सेक्टर-12
नोएडा (गौतम बुद्ध नगर) पिन: 201301
फोन: 0120-4356504/9810720714
ई मेल : teesaridunia@yahoo.com
vermada@hotmail.com
वेब साइट: www.teesariduniya.com

एक प्रति: 20 रुपये (भारत में)
30 रुपये (नेपाल में)
वार्षिक: 200 रुपये
आजीवन: 3000 रुपये

आनंद स्वरूप वर्मा द्वारा क्यू-63, सेक्टर-12, नोएडा से प्रकाशित तथा सागर प्रिंट ओ पैक, बी-46, सेक्टर-5, नोएडा से मुद्रित।
पंजीकृत कार्यालय:14, सुविधा बाजार, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110 023

इस अंक में

अपनी बात
समकालीन तीसरी दुनिया के बारे में 4
कन्नड़ विद्वान कलबुर्गी की हत्या का विरोध करो! 5

आवरण कथा
रोजावा की क्रांति — **प्रकाश राज देवकोटा** 7
इस्लामिक स्टेट के खिलाफ कोबाने का प्रतिरोध 13
महिलाओं का साझा मोर्चा 14
टर्की में महिलाओं का हथियारबंद दस्ता 17

सामयिकी
अमीरदास का गरीब आयोग — **अभिषेक श्रीवास्तव** 19
यौन अपराध और न्यूनतम सरकार — **मुशर्रफ़ अली** 48

जेलखाना, गोलियों की बौछार और कत्लगाह
बंगाल की क्रांतिकारी कविताएं
1970 के दशक के कुछ कवियों मसलन आलोक बसु, इंद्र चौधुरी, मुरारी मुखोपाध्याय, वीरेंद्र चट्टोपाध्याय, बिपुल चक्रवर्ती, शोभन सोम, तुषार चंद्र, मनोरंजन विश्वास की कविताएं
अनु.: कंचन कुमार
पृष्ठ: 30

मानव अधिकार
एक और ब्लॉगर की हत्या 27
पंजाब में सूरज सिंह का आमरण अनशन — **देवाशीष** 29

विशेष रिपोर्ट
छिटमहल: दशकों बाद मिली पहचान — **अभिषेक रंजन सिंह** 39

कविता
अल्पसंख्यक — **शोभा सिंह** 33

प्रसंग
गुजरात: संजीव भट्ट की सेवाएं समाप्त — **अनंत राय** 35

इतिहास
शहीदों के इतिहास को बदलने की साजिश — **सुधीर विद्यार्थी** 45

साहित्य
गोदान: जीवन यथार्थ का महाआख्यान — **रामू सिद्धार्थ** 53

कविता 16 मई के बाद
कानपुर में फासीवाद विरोधी कविताएं 52

कृपया पत्रिका का वार्षिक शुल्क न भेजें

पाठकों से वार्षिक शुल्क न लेने का निर्णय इसलिए करना पड़ा क्योंकि पत्रिका का दिसंबर 2015 के बाद प्रकाशन अनिश्चित है। जो लोग पत्रिका को पढ़ना चाहते हैं वे अपने नाम पते हमें भेज दें, हम उन्हें पत्रिका भेजते रहेंगे। दिसंबर से पहले अगर यह तय हो जाता है कि पत्रिका का प्रकाशन जारी रखा जा सकेगा तो हम उनसे शुल्क मांग लेंगे। जो लोग पहले से ही वार्षिक शुल्क भेज चुके हैं और उन्हें कुछ अंक मिल भी चुके हैं उनके शेष पैसे लौटा दिए जाएंगे।

यह कठोर निर्णय इसलिए लेना पड़ रहा है क्योंकि हमारी और हमारे शुभचिंतकों की कोशिश के बावजूद हम पत्रिका का कोई स्थायी कोष नहीं तैयार कर सके। हमने मई 2014 में अपनी आर्थिक कठिनाइयों से पाठकों को अवगत कराया था और अपील की थी कि यदि वे एक वर्ष तक प्रतिमाह कुछ नियमित सहयोग कर सकें तो पत्रिका का प्रकाशन कम से कम एक वर्ष के लिए सुनिश्चित किया जा सकता है और अगर इस अवधि में हमने कोई अक्षय कोष तैयार कर लिया तो हम लंबे समय तक प्रकाशन को संभव बना सकेंगे।

हमारी अपील पर बहुत उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली और पाठकों और शुभचिंतकों के सहयोग से ही पत्रिका का प्रकाशन जारी रह सका। लेकिन जिस तरह के बड़े सहयोग की हम अपेक्षा कर रहे थे वह नहीं मिल सका और हम कोई कोष नहीं बना सके। प्रतिमाह जो सहयोग राशि आती है वह यद्यपि पाठकों की क्षमता को ध्यान में रखते हुए काफी है लेकिन पत्रिका के लिए वह पर्याप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में वर्तमान स्वरूप में प्रकाशन की निरंतरता बनाए रखना लगभग असंभव है।

'समकालीन तीसरी दुनिया' का पहला अंक 1980 में निकला था। दिसंबर 1998 तक इसका प्रकाशन अनेक बार स्थगित हुआ। अगस्त 2010 से अभी तक इसका नियमित प्रकाशन जारी है। पत्रिका की आर्थिक स्थिति को लेकर हमारे बहुत सारे साथियों में बेचैनी दिखायी दे रही है और वे अपने-अपने ढंग से इसका समाधान ढूंढ रहे हैं। मैंने व्यक्तिगत तौर पर लोगों से यह कह रखा है कि अगर वे कोई ग्रुप बनाएं और वह पत्रिका के प्रकाशन की जिम्मेदारी ले सकें तो इसके स्वामित्व का हस्तांतरण करने के लिए मैं तैयार हूं। बस, मेरी एक ही शर्त है कि इसके कांटेंट में कोई परिवर्तन न किया जाय और इसकी सत्ता विरोधी वैचारिक धार को बनाए रखा जाय। अभी तक इस प्रस्ताव पर जो सुझाव आए हैं वे उत्साहवर्द्धक नहीं हैं। एक तथाकथित शुभचिंतक ने हमारे कार्यालय में आकर ही प्रस्ताव रखा कि वह एक ग्रुप का निर्माण कर रहा है और वित्तीय व्यवस्था भी कर रहा है ताकि प्रकाशन सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने मेरी मौजूदगी में ही एक बजट बनाया, कुछ लोगों के नाम लिखे और बताया कि पत्रिका के कोष में वह तकरीबन 80 लाख रुपए की व्यवस्था कर लेंगे। मैंने उनसे कहा कि अगर आप 80 लाख की व्यवस्था कर सकते हैं तो मुझे अगर 20 लाख की व्यवस्था कर दें तो मैं ही इसे जारी रख सकता हूं। उन्होंने जवाब में कहा कि जिन लोगों से सहयोग का मैंने अनुरोध किया है वे आपको और आपके साथियों को सहयोग नहीं करेंगे। मैंने कहा कि इसका अर्थ यह हुआ कि आप और आपके आर्थिक मददगार पत्रिका के कांटेंट में बदलाव करेंगे। उन्होंने जवाब दिया कि ऐसा नहीं होगा। मेरा कहना था कि अगर ऐसा नहीं होगा तो वह मेरी टीम को क्यों नहीं सहयोग कर रहे हैं। मैं और मेरी टीम ही तो कांटेंट हैं। अगर वह पत्रिका के शुभचिंतक हैं तो उन्हें सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया और मैंने उनके प्रस्ताव को खारिज कर दिया।

कहने का तात्पर्य यह है कि पत्रिका के कांटेंट के साथ किसी तरह का समझौता किए बगैर अगर सहयोग कहीं से मिलता है तो उसे लेने के लिए मैं तैयार हूं। 1980 के अंकों को देखें और इधर के अंकों से उनकी तुलना करें तो आप पाएंगे कि विचारधारा के सवाल पर हमने पर्याप्त लचीलेपन (फ्लैक्सिबिलिटी) का परिचय दिया है लेकिन हमारी बुनियादी अवधारणा यही है कि समाज का जनतांत्रिक दायरा जितना ही सिकुड़ता जाएगा, राज्य के स्तर पर और समाज में भी क्रूरता उतनी ही मात्रा में बढ़ती जाएगी। जनतांत्रिक सोच ही इस समाज में अंधविश्वास, पिछड़ापन, सांप्रदायिकता और फासीवादी प्रवृत्तियों को रोक सकती है। इस मुद्दे पर किसी भी हालत में समझौता नहीं किया जा सकता। दूसरी

बात यह है कि राज्य जैसे-जैसे पूंजीवाद की गिरफ्त में आता जा रहा है, उसकी नीतियां कॉरपोरेट हितों के पक्ष में ढलती जा रही हैं। कॉरपोरेटीकरण ने राज्य की सभी संस्थाओं को एक-एक कर अपनी चपेट में ले लिया है। अपने प्रभुत्व को स्थायी बनाने और आम जनता में इसकी स्वीकार्यता को सुनिश्चित करने के लिए मीडिया पर इसका नियंत्रण जरूरी है। मीडिया पर नियंत्रण का सिलसिला 1990 से ही, जब से वैश्वीकरण की शुरुआत हुई, जारी है जो मनमोहन सिंह की सरकार के समय उग्र रूप लेते हुए नरेंद्र मोदी की सरकार तक अत्यंत वीभत्स हो चुका है। 5 सितंबर 2006 को देश की आंतरिक सुरक्षा के प्रश्न पर मुख्य मंत्रियों की एक बैठक को संबोधित करते हुए तत्कालीन प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ने मुख्य मंत्रियों को सलाह दी थी कि वे मीडिया को 'कोऑप्ट' करने की रणनीति बनाएं ('कोऑप्टिंग दि मीडिया शुड फॉर्म पार्ट ऑफ ऐन ओवरऑल मीडिया मैनेजमेंट स्ट्रेटेजी') जिसे मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरी तरह अमली जामा पहना दिया। एक सोची-समझी रणनीति के तहत मीडिया ने उन खबरों से लोगों को वंचित रखना चाहा है जो एक-दूसरे के साथ लोगों को जोड़ सकती हैं, समन्वय स्थापित कर सकती हैं और जनतांत्रिक दायरे को विस्तार दे सकती हैं। 'डिसइनफॉर्मेशन' साम्राज्यवादी शक्तियों का एक आजमाया हुआ हथियार रहा है। आज मीडिया लोगों को इस हद तक 'डिसइनफॉर्म' और 'मिसइनफॉर्म' कर रहा है ताकि वह नोम चोमस्की के शब्दों में कहें तो सत्ता के पक्ष में 'सहमति का निर्माण' कर सके। सत्ता ने गलत सूचनाएं देने को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है। हम इसी हथियार के जरिए सत्ता की इस साजिश का मुकाबला करने के लिए मैदान में है-हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को सही सूचनाओं से और उन सूचनाओं से जिसे सत्ता छिपाना चाहती है लैस करेंगे और उन्हें शक्तिसंपन्न बनाएंगे। बेशक हम एक बड़ी पूंजी वाले मीडिया उद्योग के सामने छोटी पूंजी से घिसटते हुए चलने वाले मीडिया के जरिए इसका मुकाबला कर रहे हैं लेकिन हमें पता है कि जगह-जगह से होने वाले इन छोटे-छोटे प्रयासों का असर बड़े-बड़े चैनलों और अखबारों के मुकाबले कई गुना ज्यादा हो सकता है बशर्ते इसे हम एक आंदोलन की मानसिकता से चलाएं। अगर मैं अपनी अक्षमता अथवा आत्मगत कारणों से यह नहीं कर सका तो इस आधार पर इस अवधारणा को गलत नहीं ठहराऊंगा। हर व्यक्ति की अपनी सीमा होती है। यह सच है कि मैं कोई ऐसा समूह नहीं बना सका जो उक्त अवधारणाओं को आगे ले जा सके। लेकिन मुझे उम्मीद और विश्वास है कि अगर अपेक्षाकृत ज्यादा वैज्ञानिक ढंग से और संगठन कौशल के साथ कुछ लोग मिलकर इस प्रयास को आगे बढ़ाएं तो हम आने वाली विपदा से समाज को बचा सकेंगे।

मैं समझता हूं कि हम लोग 'समकालीन तीसरी दुनिया' के बारे में जल्दी ही किसी ठोस नतीजे पर पहुंचेंगे। वर्तमान अंक से हमने ऐसे कुछ प्रयास शुरू किए हैं जिनसे पत्रिका के खर्च में कटौती की जा सके। हमारे कई साथी इस स्थिति से उद्विग्न होकर काफी सक्रिय भी हो गए हैं। जैसा भी निर्णय होगा हम नवंबर के अंक में आपको सूचित करेंगे।

– आनंद स्वरूप वर्मा

कन्नड़ विद्वान कलबुर्गी की हत्या का विरोध करो!

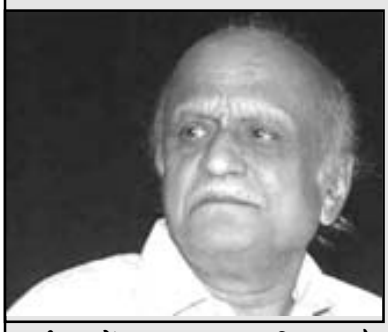

कर्नाटक में मशहूर कन्नड़ विद्वान और हंपी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एम.एम. कलबुर्गी की 29 अगस्त को दिनदहाड़े उनके घर पर गोली मार कर हत्या कर दी गयी। वह 77 साल के थे। कलबुर्गी लंबे समय से अपने भाषणों और लेखों के जरिये धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास के खिलाफ अलख जगाने में लगे थे जिससे वह हिंदुत्ववादी संगठनों के निशाने पर थे। पिछले वर्ष विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल ने दक्षिण कन्नड़ जिला मुख्यालय पर कलबुर्गी के खिलाफ प्रदर्शन किया था और उनका पुतला फूंका था। कलबुर्गी की हत्या के बाद बजरंग दल के बंतवाल तालुक के सह संयोजक भुविथ शेट्टी ने ट्वीट कर कहा कि 'उस समय यू आर अनंतमूर्ति था और अब कलबुर्गी। हिंदू धर्म का मजाक उड़ाओ और कुत्ते की मौत मरो। और प्रिय के.एस. भगवान, अगला नंबर तुम्हारा है।' के.एस.भगवान मैसूर विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर हैं और हिंदुत्ववादियों के निशाने पर हैं। नरेंद्र दाभोलकर और गोविंद पानसरे की हत्या भी इन्ही तत्वों ने की जो अभी तक नहीं पकड़े गए...हम इस जघन्य कृत्य की कड़े से कड़े शब्दों में भर्त्सना करते हैं। -स.ती.दु.

ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन ही नहीं, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन भी है

इतिहास, राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र

स्वामी सहजानंद सरस्वती
मेरा जीवन संघर्ष 550.00/200.00
किसान कैसे लड़ते हैं? 225.00/95.00
क्रांति और संयुक्त मोर्चा 350.00/125.00
खेत मजदूर और झारखंड के किसान 225.00
किसान क्या करें? 650.00/325.00
किसान आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि 1225.00/550.00

अंतोनियो ग्राम्शी
सांस्कृतिक और राजनीतिक चिंतन के बुनियादी सरोकार 1250.00/595.00

एंथनी ब्रेवर
साम्राज्यवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत 725.00/350.00

कृष्णमोहन श्रीमाली
धर्म, समाज और संस्कृति 525.00

समीर अमीन
भूमंडलीकरण के युग में पूंजीवाद 250.00

माइकेल विट्ज़ेल
आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना 325.00

वी.आई. लेनिन
क्या करें? 425.00/160.00

कार्ल मार्क्स
1844 की आर्थिक और दार्शनिक पांडुलिपियां 650.00/375.00

फ्रेडरिक एंगेल्स
परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति 375.00/160.00

मोहम्मद हबीब
दिल्ली सल्तनत का राजनीतिक सिद्धांत 650.00/325.00
भारतीय इतिहास का आरंभिक मध्यकाल 450.00
भारत के आरंभिक मध्यकाल में राजनीति 750.00
जीवन चरित, भारत के बाहर इसलामी संस्कृति और ऐतिहासिक पद्धति 725.00

सुकोमल सेन
भारत का मजदूर वर्ग 1475.00/525.00

प्रभात कुमार शुक्ल (सं.)
इतिहास लेखन की विभिन्न दृष्टियां 1250.00/575.00

अरविंद सिन्हा
संक्रांतिकालीन यूरोप (सामंतवाद से औद्योगिक क्रांति तक) 1050.00/575.00

रजनी पाम दत्त
आज का भारत (अनु. रामविलास शर्मा) 850.00/370.00
फासीवाद और सामाजिक क्रांति 450.00
विश्व का राजनीतिक परिदृश्य 375.00

इम्तियाज़ अहमद
भारत के मुसलमानों में जातिव्यवस्था और सामाजिक स्तरीकरण 425.00
आधुनिक समाज में वर्ग 200.00

इरविंग एम. जेटलिन
विचारधारा और समाजशास्त्रीय सिद्धांत का विकास 925.00/425.00

एंथनी गिडेन्स
पूंजीवाद और आधुनिक सामाजिक सिद्धांत 500.00/175.00
समाजशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय 275.00
समाजशास्त्रीय पद्धतियों के नए नियम 350.00

मार्क ब्लाख
सामंती समाज (दो भागों का सेट) 950.00
इतिहासकार का शिल्प 450.00/225.00

प्रभात पटनायक
गुलामी के चक्रव्यूह में भारतीय अर्थव्यवस्था 800.00/475.00

दामोदर धर्मानंद कोसंबी
मिथक और यथार्थ 450.00

पूरनचंद्र जोशी
भारत में सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास 675.00/500.00

आनंद तेलतुमड़े
साम्राज्यवाद का विरोध और जातियों का उन्मूलन 425.00
सत्ता समाज और दलित 425.00/195.00

रमानाथ मिश्र
भारतीय मूर्तिकला का इतिहास 600.00

रणधीर सिंह
पारिस्थितिकी संकट और समाजवाद का भविष्य 475.00/275.00

आर्नल्ड हाउजर
कला का इतिहासदर्शन 625.00

डेविड सी. कॉर्टन
एक नई अर्थव्यवस्था की कार्यसूची 650.00/475.00

रोजा लग्जमबर्ग
सुधार अथवा क्रांति 225.00

जॉर्ज लूकाच
इतिहास दृष्टि और ऐतिहासिक उपन्यास 725.00

मिशेल बो
पूंजीवाद का इतिहास (1500-2000) 975.00/575.00

कृष्णकान्त मिश्र
समाजवादी चिंतन का इतिहास (तीन भागों का सेट) 3000.00/1200.00
राजनीतिक सिद्धांत और शासन 850.00/250.00
भारतीय शासन और राजनीति 750.00/195.00
बीसवीं सदी का चीन : राष्ट्रवाद और साम्यवाद 550.00

एम.एन. राय
संक्रांति के दौर का भारत 350.00

एंथनी ब्रेवर
साम्राज्यवाद की मार्क्सवादी व्याख्याएं 725.00/350.00

ताराचन्द
भारतीय संस्कृति पर इसलाम का प्रभाव 450.00

राबिन हानेल
राजनीतिक अर्थशास्त्र का सरल परिचय 850.00/525.00

पूरनचंद्र जोशी
भारत में भूमि सुधार अध्ययनों का सर्वेक्षण 275.00/125.00
भारत में सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक विकास (समाजशास्त्रीय दृष्टि) 275.00/125.00

इलेन मिकसिन्स वुड
पूंजीवाद का उद्भव 175.00

इलेन मिकसिन्स वुड, जॉन बेलेमी फास्टर
इतिहास के पक्ष में 375.00

विश्वंभर शरण पाठक
भारत के प्राचीन इतिहासकार 350.00

ज्यॉर्ज लेफेब्रे
फ्रांसीसी क्रांति 750.00/225.00

जोन रॉबिन्सन
स्वाधीनता और आवश्यकता 225.00

वृंदा कारात
भारतीय नारी : संघर्ष और मुक्ति 395.00/175.00

गिरीश मिश्र
उपभोक्तावाद 525.00/325.00

उमा चक्रवर्ती
जाति समाज में पितृसत्ता 325.00/195.00

रणधीर सिंह
मार्क्सवाद, समाजवाद और भारतीय राजनीति 925.00/450.00

विस्तृत जानकारी के लिए लिखें
ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी-7, सरस्वती कामप्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली 110092
फोन : 22025140, 65179059, (R) 64688542, 22731014
e-mail: granthshilpi.delhi@gmail.com; Website: www.granthshilpi.com